Raj Express (Indore), 30th July 2024, Page-04

► देशभर में 400 नगर वन और 200 नगर वाटिका विकसित करने की परिकल्पना...

देश का पहला आईआईटी बना इंदौर जहां स्थापित की जाएगी वृहद वन वाटिका

परियोजना क्रियान्वयन के लिए 1.98 करोड़ स्वीकृत

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन व योजना प्राधिकरण (कैम्पा) के अंतर्गत नगर वन परियोजना के लिए आईआईटी इंदौर को चुना है। इस परियोजना के लिए आईआईटी इंदौर को देश के पहला आईआईटी और जिले के एकमात्र शैक्षणिक संस्थान के रूप में चुना गया है। इस विकास के लिए कुल 50 हेक्टेयर वन भूमि की पहचान की जाएगी और इसका उपयोग वनीकरण, सहायक प्राकृतिक पुनर्जनन के माध्यम से वनों की गुणवत्ता में सुधार, जैव विविधता के संवर्धन, वन्यजीव वास में सुधार, वन आग पर नियंत्रण, वन संरक्षण और मृदा व जल संरक्षण उपायों के लिए किया जाएगा। इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए कुल 1.98 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं।

शहरवासियों के जीवन की गुणवत्ता में लाना है सुधार: इसका शिलन्यास समारोह आयोजित किया गया। नगर वन योजना (एनवीवाई) की पायलट योजना में 2020-21 से 2024-25 की अवधि के दौरान देश में 400 नगर वन और 200 नगर वाटिका विकसित करने की परिकल्पना की गई है, जिसका उद्देश्य वनों और हरित क्षेत्र के अतिरिक्त वृक्षों को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना, शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में जैव विविधता और पर्यावरणीय लाभ को बढ़ाना और शहरवासियों के ज़ीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। कार्यक्रम में पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के राष्ट्रीय कैम्पा के सीईओ सुभाष चंद्रा और आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी भी उपस्थित रहे।

करना चाहिए बेसलाइन डेटा में सुधार

चंद्रा ने कहा आईआईटी इंदौर को परिसर में एक स्वचालित मौसम केंद्र की व्यवहार्यता पर विचार करना चाहिए और वर्षा पैटर्न व जैव विविधता का अध्ययन करना चाहिए जो प्रकृति और जलवायु का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण है। संस्थान को इस क्षेत्र के पुराने पौधों की एक सूची तैयार करनी चाहिए और जैव विविधता के बेसलाइन डेटा में सुधार करना चाहिए और लगभग 170 प्रकार के पेड़ लगाने चाहिए जो मध्य भारत में विशिष्ट हैं। ऐसी जैव विविधता विकसित करके जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव देखने के लिए एक अध्ययन किया जाना चाहिए।

वर्षा चक्र में परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा को मिल रही चुनौती

चंद्रा ने कहा, हम जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से अवगत हैं, जिससे सूखा, अचानक बाढ़, बादल फटने जैसी घटनाएं हो रही हैं, जिसके कारण जल और जैव विविधता के प्राकृतिक चक्र पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। वर्षा चक्र में परिवर्तन से भूमि की उत्पादकता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिस वजह से हानिकारक कीटों का जन्म हो रहा है और खाद्य सुरक्षा को चुनौती मिल रही है। इन परियोजनाओं के माध्यम से, हमारा इरादा मिट्टी के क्षरण को रोकना और वर्षा आधारित नदियों में जल की मात्रा में सुधार करना है।

बढ़ा रहे हैं प्राकृतिकवास

प्रोफेसर जोशी ने कहा, आईआईटी काफी समय से इस परियोजना पर काम करना चाहता था। हमें खुशी है कि हमें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रकृति के संरक्षण की स्थिति में आईआईटी अद्वितीय रहा है और हम लगातार बांध व तालाब विकसित कर रहे हैं साथ ही प्राकृतिकवास को बढ़ा रहे हैं। वन वाटिका के बनने से हमारी अलग पहचान बनेगी, क्योंकि हम ऐसी परियोजना प्राप्त करने वाले पहले आईआईटी हैं। इस परियोजना के अनुदान से पहले भी आईआईटी इंदौर इस तरह की परियोजनाओं पर काम कर रहा है, लेकिन इस अनुदान से गतिविधियों को और गति मिलेगी।